केस स्टडी

नवराही कुआँ में बबन यादव का योगदान

टोला– नवराही
गाँव– तेल्हुआँ
पंचायत– दक्षिण तेल्हुआँ
प्रखण्ड– नौतन
जिला– प0 चम्पारण (बिहार)

कुआँ का इतिहास :–

चम्पारण तटबंध के नजदीक लगभग एक किलोमिटर दूर गढ़क नदी बहती हैं। उसी नदी के किनारे एक छोटा सा झील पड़ा हुआ था। जिसपर एक छोटा–सा गॉव बसा, जिसका नाम नवराही पड़ा। वहाँ के लोग गाँव से दूर जाकर एक गढ़ा खोदते थे तथा फिर पानी लाते थे। उसी पानी को अपने खाने–पीने के काम मे लाते थे। दूरी के कारण पूरा समय पानी लाने में ही बीत जाता था। दिन के आधे समय में ही पानी खत्म हो जाता था। एक समय की बात है की उस गाँव में धूमते–फिरते एक सत्यनामी बाबा आए और एक वृक्ष के पास बैठ गए। वे बहुत प्यासे थे, उन्होने उसी गॉव के एक औरत से पानी पीने के लिए मॉगा। उस औरत ने बोली बाबा पानी तो नहीं हैं, पानी बहुत दुर से लाना पड़ेगा। इस बात को सुनकर बाबा बहुत दुःखी हुए। उन्होंने अपने मन में विचार किया की यहॉ पर एक कुऑ खोदना जरूरी है।

फिर एक दो माह के बाद सन् 1932 ई0 में सत्यनामी बाबा ने वहाँ एक कुऑ खोदवा कर निर्माण कार्य को पुरा कराये। बाबा को नवराही गॉव के लोगो का दुःख देखकर तरस आया। इसी कारण से वे ग्रामीणों का सहयोग लेकर दूसरे गाँव से भी चंदा इक्कठा करके अपने ही मेहनत से कुआँ का निर्माण सन् 1933 ई0 में करवाएँ। उसी समय से नवराही गाँव के रहने वाले सभी लोग कुऑ का पानी पीने लगे।

दो साल के बाद सन् 1934 ई0 में भुकम्प हुआ तो उस कुऑ मे बालू भर गया। जिससे लोगों को फिर एक बार पानी पीने की समस्या गाँव वालो के सामने आ गई। कुऑ भठ गया। फिर एक बार सत्यनामी बाबा उस गॉव में धुमते हुए आये। तो कुऑ भठा पड़ा था। सत्यनामी बाबा फिर ग्रामीणों के सहयोग से उस कुऑ को साफ–सफाई कराए, और फिर दुबारा उस कुऑ में अच्छा पानी आ गया। वहा के लोग पानी पीने लगे।

अभियान का प्रवेष :–

नवराही गाँव में जब मेघ पाईन अभियान के साथियों ने आना –जाना शुरू किया तो उन्होने बतलाया की गॉव वाले कुछ सहयोग राषि जमा करे और बाकी रूपया हम अपने अभियान के तरफ से लगा कर कुऑ का मरम्मती कार्य करा दिया जायेगा। गाँव में कई बार सम्पर्क एवं लगातार बैठक करने के उपरांत वहॉ के लोगो में जागरूकता आया और फिर 200/– रू0 ग्रामीणो के तरफ से चंदा के रूप में इक्कठा हुआ। अभियान के तरफ से 1000/– रू0 मिलाकर कुऑ का जगत और चबुतरा का निर्माण कराया गया। इस कुँए में घीरनी लगा कर बाल्टी एवं रस्सी दिया गया। अब नवराही गॉव के लोग स्वच्छ एवं शुद्ध पानी पी रहे है।

बबन यादव की पारिवारिक स्थिति :–

नवराही गॉव के रहने वाले बबन यादव का उर्म 65 वर्ष हैं। उनके दो लड़के एवं दो लड़कियाँ हैं। उनकी पत्नी का नाम मुखिया देवी हैं। वे अपने लड़का एवं लड़की की शादी कर चुके हैं। उनके पास एक एकड़ जमीन हैं। उनके दोनो लड़के आपस में पारिवारिक बँटवारा करके अलग–अलग काम–काज करते हैं। अपने जीने खाने के लिए भैंस का घास भूसा एवं घरेलु कार्य में रहते हैं। गाँव में बबन यादव की एक अच्छी पहचान है। लोग इनके बातों एवं विचारों को स्वीकारते है तथा सामाजिक कार्यो में इनका सहयोग भी करते है।

बबन यादव का अभियान से जुड़ाव :–

बबन यादव एक सामाजिक आदमी हैं। समाज का सेवा भी करते हैं। बबन यादव के गाँव में जैसे ही अभियान के तरफ से कुँआ के अधूरे कार्य को पूरा करने की बात उठाई गई, उसी समय से बबन यादव कुँआ को फिर से चालु करने के लिए आगे बढ़कर नेतृत्व करने लगे। फलतः गाँव की चंदा की वसूली करना, कुँआ की मरम्मती कराना, कुँआ की सफाई कराना, उड़ाही कराना आदि कार्यो में उनका सराहनीय योगदान मिलने लगा। गाँव के लोगों में वर्षो पुराना बंद कुँआ को फिर से चालू कराने की एक उत्साह एवं उमंग आया। लोगो को यह विष्वास होने लगा कि जब से कुँआ बंद था तब से हमलोग पेट से

संबंधित कई बिमारियों से ग्रसित होने लगे थे। अब कुँआ को बन जाने के बाद लग रहा है कि हमलोगों को शुद्ध एवं स्वच्छ पानी मिलेगा। अब गाँव के लोग बबन यादव के इस किये जा रहे प्रयास के प्रति सराहना कर रहें है। आज गाँव में लोगों को पेट से संबंधित कोई बिमारी नहीं हो रही है। लोग कुँआ के पानी को पी रहे है।

कुऑ की देख–रेख की जिम्मेवारी में बबन यादव की भूमिका :–

नवराही गाँव में 2008 से आज तक कुँआ के उड़ाही, सफाई एवं मरम्मती कार्य की पूरी जिम्मेवारी बबन यादव की होती है। गाँव के लोग पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ कुँआ के काम में बबन यादव का सहयोग करते है। बबन यादव भी स्वंय सुबह–षाम अपने नैतिक सामाजिक दायित्व को समझते हूए कुँआ के आस–पास साफ–सफाई एवं कुँआ के प्रबंधन पर पूरी ध्यान रखते है। आज बबन यादव एवं उनके परिवार कुँआ के कराये गये महत्वपूर्ण कार्य के लिए अपने को गौरवान्वित महसूस करते है। गाँव के लोग भी उनको सम्मानित नजरों से देखते है।